एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

हल्दी की खेती

(डॉ. विनय कुमार[1] एवं *डॉ. राम भरोसे[2])

[1]वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि वानिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती

[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती

(आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: rbharose1@gmail.com

हल्दी का उपयोग प्राचीनकाल से विभिन्न रूपों में किया जाता आ रहा हैं, क्योंकि इसमें रंग महक एवं औषधीय गुण पाये जाते हैं। हल्दी जिंजिवरेंसी कुल का पौधा हैं। इसकी उत्पत्ति दक्षिण पूर्व एशिया में हुई हैं। क्योंकि इसमें रंग महक एवं औषधीय गुण पाये जाते हैं। वर्तमान समय में प्रसाधन के सर्वोत्तम उत्पाद हल्दी से ही बनाये जा रहे हैं। हल्दी में कुर्कमिन पाया जाता हैं तथा इससे एलियोरोजिन भी निकाला जाता हैं। हल्दी में स्टार्च की मात्रा सर्वाधिक होती हैं। इसके अतिरिक्त इसमें 13.1 प्रतिशत पानी, 6.3 प्रतिशत प्रोटीन, 5.1 प्रतिशत वसा, 69.4 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 2.6 प्रतिशत रेशा एवं 3.5 प्रतिशत खनिज लवण पोषक तत्व पाये जाते हैं। इसमें वोनाटाइन ऑरेंज लाल तेल 1.3 से 5.5 प्रतिशत पाया जाता हैं। भारत विश्व में सबसे बड़ा हल्दी उत्पादक देश है। भारत में हल्दी का विभिन्न रूपों में निर्यात जापान, फ्रांस यू.एस.ए., यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, नीदरलैंड, सउदी अरब एवं आस्ट्रेलिया को किया जाता है। हल्दी की खेती मसाला फसल के लिए की जाती है। इसके अलावा हल्दी का उपयोग कई तरह की औषधियों को तैयार करने के लिए भी करते है। इसका उत्पादन कंद के रूप में प्राप्त होता है। भारतीय हिन्दू समाज के लोग हल्दी का उपयोग धार्मिक रीति रिवाजो में भी करते है। हल्दी में बहुत से खास गुण पाए जाते है, जिससे यह बहुत ही काम की चीज कहलाती है। इसके कंद में कुर्कमिन होता है, तथा एलियोरोजिन को भी इससे निकाला जाता है। हल्दी में स्टार्च अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसके अलावा इसमें प्रोटीन, वसा, पानी, कार्बोहाइड्रेट, रेशा और खनिज लवण की भी पर्याप्त मात्रा पायी जाती है। आयुर्वेदिक उपचार में भी हल्दी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, जिस वजह से आयुर्वेदिक दवाइयों को बनाने के लिए भी इसका उपयोग अधिक मात्रा में किया जाता है। दूध के साथ हल्दी का सेवन करने से अंदरूनी चोट तेजी से ठीक हो जाती है।

हल्दी की खेती के लिए जलवायु

हल्दी एक मसाला फसल है, जिस क्षेत्र में 1200 से 1400 मि.मी. वर्षा, 100 से 120 वर्षा दिनों में प्राप्त होती है, वहां पर इसकी अति उत्तम खेती होती है। समुद्र सतह से 1200 मीटर ऊंचाई तक के क्षेत्रों में यह पैदा की जाती है, परंतु हल्दी की खेती के लिए 450 से 900 मीटर ऊंचाई वाले क्षेत्र उत्तम होते हैं। हल्दी एक उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र की फसल हैं। हल्दी के लिए 30 से 35 डिग्री से.मी. अंकुरण के समय, 25 से 30 डिग्री से.मी. कल्ले निकलने 20 से 30 डिग्री से.मी. प्रकंद बनने तथा 18 से 20 डिग्री से.मी. हल्दी की मोटाई हेतु उत्तम है।

हल्दी की प्रजातियां

नरेंद्र हल्दी –1, नरेंद्र हल्दी 2, नरेंद्र हल्दी 3, नरेंद्र हल्दी 98, नरेंद्र सरयू अमला पुरम सी. ए. –73, दुग्गिरेला सी.एल.एल.–325, आर्मुर सी.एल.एल.–324, पी.टी.सी.–8, कस्तूरी, रोमा, सूरमा, सोनाली

खाद, उर्वरक

खेती के लिए भूमि को तैयार करते समय उसमें गोबर की खाद या कम्पोष्ट 30 से 40 टन प्रति हेक्टेयर की दर से बेड़ों पर बिखेर कर तथा छोटे गढ्डे करके उस में भर देते हैं। उर्वरक जैसे नाईट्रोजन (60 किलोग्राम), फास्फोरस (50 किलोग्राम) तथा पोटाश 120 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से अपघटित मात्रा में डालना चाहिए। जबकि बुवाई के समय 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से जिंक और जैविक खाद जैसे ओएल केक 2 टन प्रति हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए। अगर जिंक और ओरगानिक खाद का उपयोग कर रहे हैं तो गोबर की खाद की मात्रा कम कर देना चाहिए। कम्पोष्ट 2. 5 टन प्रति हेक्टेयर की दर से खाद जैव उर्वरक तथा एन.पी. के संस्तुत मात्रा की आधी मात्रा के साथ मिलाकर भी दे सकते हैं।

हल्दी फसल के प्रमुख कीट एवं व्याधियां :–

क्रं. सं.	थ्रिप्स कीट	15 दिन के अंतराल में कार्बाराइन या डाई मिथियोट का छिड़काव पौधों पर तीन बार करे
1	लीफ ब्लाच कीट	मैकोजेब का छिड़काव पौध पर करे
2	प्रकंद विगलन जल भराव	बीज रोपाई से पूर्व इंडोफिल एम दृ 45 और वेभिस्टीन के मिश्रण से बीजो को उपचारित कर ले, तथा रोग लगने पर इसी घोल का छिड़काव पौधों की जड़ो पर कर
3	पत्ती धब्बा	पौधों पर ब्लाइटाक्स का छिड़काव करे
4	तना छेदक कीट	ट्राइजोफास की उचित मात्रा का छिड़काव पौधों पर करे

उपज :– इस प्रकार 100 किग्रा कच्ची गाँठों से प्रसंस्करण के उपरान्त 20–25 किग्रा सूखी हल्दी प्राप्त हो जाती है।

बीज सामग्री का भंडारण :– खुदाई कर उसे छाया में सुखा कर मिट्टी आदि साफ करें. प्रकंदों को 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 या 0.15 प्रतिशत बाविस्टीन एवं 0.05 प्रतिशत मैलाथियान के घोल में 30 मिनिट तक उपचारित करें. इसे छाया में सुखाकर रखें. हल्दी भंडारण के लिए छायादार जगह पर एक मीटर चौड़ा, 2 मीटर लम्बा तथा 30 से.मी. गहरा गड्ढा खोदें. जमीन की सतह पर धान का पुआल या रेत 5 से.मी. नीचे डाल दें. फिर उस पर हल्दी के प्रकन्द रखें इसी प्रकार रेत की दूसरी सतह बिछा कर हल्दी की तह मोड़ाई करें. गड्ढा भर जाने पर मिट्टी से ढॅककर गोबर से लीप दें.

हल्दी की क्योरिंग :– हल्दी के प्रकन्दों को सूखा लेना चाहिए तथा उसके ऊपर की गंदगी साफ करके कड़ाहे में उबलने के लिए डालें. फिर उसे कड़ाहे में चूने के पानी या सोडियम बाई कार्बनेट के पानी में घोल लें. पानी की मात्रा उतनी ही डालें जिससे पानी ढॅक जावे. उसे 45 से 60 मिनट तक उबाले जब सफेद झाग आने लगे तथा उसमें से जब विचित्र महक आने लगती है, तब उसे अलग से पृथक करें. आजकल सोलर ड्रायर भी हल्दी के लिए बनाये गये हैं. उसे पानी से निकाल कर अलग करें. हल्दी जो कि उबल कर मुलायम हो गयी है या नहीं. खुदाई के 2 दिन बाद ही उबालना चाहिए. फिर उसे 10–15 दिन सुखाएं.

हल्दी का सुखाना :– उबली हुई हल्दी को बांस की चटाई पर रोशनी में 5–7 से.मी. मोटी तह पर सुखायें. शाम को ढॅककर रख दें. 10–15 दिन पूर्णतया सूख जाने से ड्रायर के 60 डिग्री से. पर सुखाते हैं. सूखने के बाद तक उत्पाद प्राप्त होता हैं.

हल्दी का उपयोग

1. भोजन में सुगन्ध एवं रंग लाने में, बटर, चीज, अचार आदि भोज्य पदार्थों में इसका उपयोग करते हैं. यह भूख बढ़ाने तथा उत्तम पाचक में सहायक होता हैं.
2. यह रंगाई के काम में भी उपयोग होता हैं.
3. दवाओं में भी उपयोग किया जाता हैं.
4. कास्मेटिक सामग्री बनाने में भी इसका उपयोग किया जाता हैं.